सलाह • बिहार में मोती उत्पादन की संभावनाओं को तलाशने के उद्देश्य से जलाशय में किया जा रहा परीक्षण

वैज्ञानिक तकनीक से सीप और मोती का उत्पादन कर कमा सकते ढाई गुना मुनाफा

भास्कर न्यूज | पूसा

मोती एक ऐसा रत्न है जो जीवों द्वारा उत्पादित किया जाता है। इसी कारण से मोती को जैविक रत्न भी कहा जाता है। यह मुख्यतः एक कठोर पदार्थ है जो मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट, कोचिंयोलिन प्रोटीन को संकेंद्रीय स्तरों में जमा करके जलीय जीवों द्वारा बनाया जाता है। बिहार के किसान अपने-अपने तालाबों में वैज्ञानिक तकनीक से मोती का उत्पादन कर लागत से ढाई गुना अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। यह जानकारी डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की मतस्य विज्ञान विभाग की विषय वस्तु विशेषज्ञ अभिलिप्सा विश्वाल ने दी। उन्होंने कहा कि भारत में कुल 52 प्रजातियों के सिप (द्विकपार्टी कवक युक्त जीव) पाएं जाते हैं। इनमें से मोती उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त प्रजाति लैमेलिडेन्स, मार्जिनलिस, पायरेसिया, कोरूगाटा एवं लैमिलिडेन्स कोरियनस आदि हैं। उन्होंने बताया कि सिप की ये प्रजातियां भारत के पूर्वोत्तर, पश्चिमी, मध्य और दक्षिणी भाग में पाए जाते हैं। सिप मुख्य रूप से सूक्ष्म हरा शैवाल, नील हरी शैवाल, पादप प्लब्क एवं प्राणी प्लब्क आदि को आहार के रूप में ग्रहण करती है। उन्होंने बताया कि सिपो को तालाब के तल से उनके आहार के आधार पर हाथ से चयन किया जाता है। एक स्वस्थ सिप की लंबाई 8 सेंटीमीटर और उसका वजन 35 ग्राम या उससे अधिक होना चाहिए ऐसा सिप मोती उत्पादन के लिए उपयुक्त माना जाता है। उन्होंने बताया कि मध्य बिहार के कृषि जलवायु क्षेत्र के मधुर जल में मोती उत्पादन के संभावना को तलाशने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के जलाशय में मोती उत्पादन पर परीक्षण किया जा रहा है।

सीप की कई प्रजातियां भारत के पूर्वोत्तर, पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं

सीप का सर्जरी करती विशेषज्ञ।

सिपो के सर्जरी का सबसे अनुकूल मौसम अक्टूबर से दिसंबर महीने तक होता है

हालांकि सिपो के सर्जरी का सबसे अनुकूल मौसम शरद ऋतु अक्टूबर से दिसंबर महीने तक का होता है। म्यांटल गुहिका और म्यांटल उत्तक में प्रत्यारोपण करने से मोती उत्पादन की सफलता 60 से 70 प्रतिशत तक बढ़ जाती है और मात्र 12 से 15 महीने में मोती उत्पादन हो जाता हैं। उन्होंने बताया कि मधुर जल में मोती उत्पादन के लिए तालाब में 25 हजार प्रति एकड़ की दर से सिपो को नाइलॉन बैग जिसकी लंबाई 30 सेंटीमीटर एवं चौड़ाई 13 सेंटीमीटर जाली वाला जिसका छिद्र का आकार 1.5 सेंटीमीटर के जाल में सिपो को रखकर सिप पालन किया जा सकता है।

ऐसे किया जाता है सीपों का सर्जिकल प्रत्यारोपण

बताया कि सिप का चयन करने के बाद उनमें सेल पाउडर से बने न्यूक्लियस को कुल तीन पद्धतियों से शरीर में सर्जरी विधि द्वारा प्रत्यारोपण किया जाता है। पहली पद्धति म्यांटल गुहिका में प्रत्यारोपण, दूसरी पद्धति म्यांटल उत्तक में प्रत्यारोपण एवं तीसरी पद्धति जनन ग्रंथि में प्रत्यारोपण कर किया जाता है। विशेषज्ञ ने बताया कि प्रत्यारोपण करने के उपरांत एंटीबायोटिक का प्रयोग करके अगले 7 दिनों तक पानी टैंक में सिपो का विशेष ध्यान रखा जाता है। इसके बाद तालाब में सिपो को स्थानांतरित कर दिया जाता है। गर्मी के मौसम मई और जून महीने को छोड़कर शिपो के सर्जरी की यह प्रक्रिया पूरे वर्ष में कभी भी पूर्ण की जा सकती हैं।

Dainik Bhaskar 21-07-2023